एक दिवसीय संगोष्ठी पर रिपोर्ट: शैवाल विविधता और बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR)

तारीख: 14 दिसंबर 2024

आयोजक: साइंस काउंसिल और वनस्पति विज्ञान विभाग, नायक नित्यानंद साई शासकीय महाविद्यालय, अरा

संगोष्ठी का शुभारंभ सुबह 10:30 बजे उद्घाटन समारोह के साथ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य महोदया द्वारा प्रेरणादायक वक्तव्य के साथ हुई। प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. पी.के. सिंह (सहायक प्राध्यापक, वनस्पति विज्ञान विभाग, विजय भूषण सिंहदेव गर्ल्स कॉलेज, जशपुर) ने एम.ओ.पी. अयंगार को श्रद्धांजलि अर्पित की। यह सत्र गूगल मीट के माध्यम से आयोजित किया गया। डॉ. सिंह ने शैवाल विविधता और शैवाल अनुसंधान पर एक विस्तृत और ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। प्रो. एम.ओ.पी. अय्यंगार का जन्म 15 दिसंबर, 1886 को हुआ था, वह एक प्रसिद्ध भारतीय फाइकोलॉजिस्ट थे जिन्होंने शैवाल अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्हें "भारतीय फाइकोलॉजी के पिता" के रूप में जाना जाता है, और उन्होंने शैवाल के अध्ययन में एक अग्रणी भूमिका निभाई थी।प्रो. अय्यंगार का काम मुख्य रूप से वोल्वोकेल्स पर केंद्रित था, और उन्होंने फ्रिट्शिएला, गिल्बर्टस्मिथिया, एकबैलोसिस्टोप्सिस और चारैकियोसिफॉन सहित कई नए शैवाल प्रजातियों की खोज की। वह फाइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के पहले अध्यक्ष भी थे और भारत में फाइकोलॉजी के क्षेत्र की स्थापना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पिंकी भगत ने एम.ओ.पी. अयंगार के योगदान का परिचय दिया और उनके वनस्पति विज्ञान में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र: दूसरे सत्र में डॉ. विवेक सिंह ने बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) की आवश्यकता और इसके इतिहास पर एक रोचक और ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया। एम.एससी. (तृतीय सेमेस्टर) के वनस्पति विज्ञान छात्रों ने IPR के विभिन्न पहलुओं पर जानकारीपूर्ण प्रस्तुतियां दीं, जिनमें पेटेंट्स (दंतेश्वरी), IPR (सरिता), ट्रेडमार्क्स (अंसुमला), और भौगोलिक संकेतक (ममता) शामिल थे।

तृतीय सत्र: तीसरे सत्र में एम.एससी. (प्रथम सेमेस्टर) के वनस्पति विज्ञान छात्रों ने शैवाल विविधता पर एक आकर्षक प्रस्तुति दी। इस सत्र में गौरिशंकर, सविता, सलमान, आरती, अनीता, राजकुमारी, रिंकी, नितिन मिंज, सुधा, सुगंती, संध्या और नीमी ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने वोल्वॉक्स, ओएडोगोनियम, यूलोथ्रिक्स, चेटोफोरस, फूकस, स्पाइरोगायरा, सरगस्सम, वाउचेरीया, पॉलीसिफोनिया, क्लोरेला और नॉस्टॉक, M.sc 3rd sem Botany Sarita -Algal bloom जैसी विभिन्न शैवाल प्रजातियों पर पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी।संगोष्ठी का समापन प्राचार्य महोदया के प्रेरणादायक शब्दों के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने छात्रों को प्रोत्साहित किया और आगामी संगोष्ठियों के आयोजन के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। कार्यक्रम का समापन दोपहर 2:30 बजे राष्ट्रगान के साथ हुआ। प्रमाण पत्र वितरण किया गया।

यह संगोष्ठी खुशबू खलखो सहायक प्राध्यापक, वनस्पति विज्ञान विभाग, के नेतृत्व में अत्यंत सफल रही। इसने छात्रों और शिक्षकों को अर्थपूर्ण चर्चाओं में शामिल होने और शैवाल विविधता तथा बौद्धिक संपदा अधिकारों की रोचक दुनिया को जानने का एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया। इस कार्यक्रम में छात्रों, शिक्षकों और अतिथियों ने सक्रिय भाग लिया और सभी ने जानकारीपूर्ण और इंटरैक्टिव सत्रों की सराहना की।

प्राचार्य
नायक नित्यानन्द साय शासकीय महाविद्यालय
आरा, जिला-जशपुर (छ०ग०)